आगाज हूँ मैं

डॉ कंचन जैन "स्वर्णा"

भीड़ का हिस्सा नहीं, आगाज हूं मैं।
इतिहास बदलने वाला कलमकार हूं मैं।
पूछता है जमाना मेरी पहचान, कौन हूं मैं।
विचारों में समन्दर सी गहराई लेकर चलने वाला, नदी सा बहाव हूं मैं।
हर सीढ़ी पर, रोज हार से मिलता हूं,
फिर भी जीत का ताज हूं मैं।
हाथ में लेकर कलम की ज्योति निकला हूं,
भविष्य का अखण्ड दीप हूं मैं।
जमीन पर खड़े होकर तिनका तिनका बुनता हूं,
फिर भी वनराज हूं मैं।
पढ़ रहा हूं, करीने से इतिहास के हर पन्ने को बड़े इत्मीनान से,
आने वाले भविष्य का नाम हूं मैं।
उगते सूरज का उजाला और चांद की चांदनी लेकर चला हूं, प्रयासों के सफर पर
मैं।
आने वाली सुबह के पहली किरण का आगाज हूं, मैं।

Scanned with OKEN Scanner